कमलेश्वर विभाजन की त्रासदी

विभाजन की पृष्ठभूमि:

मानुष प्रेम भयहू बैकुंठि नहीं त तन क्षार एक मुट्ठी। मनुष्य की सार्थकता इसी प्रेम में है। इस प्रेम के बिना मनुष्य का शरीर एक मुट्ठी राख से अधिक कुछ नहीं है। प्रेम है तो मनुष्य बचा रहता है। प्रेम नहीं है तो मनुष्य हैवान हो जाता है। विभाजन का संघर्ष वर्चस्व व शासन सत्ता का संघर्ष है। जैसे-जैसे सत्ता की प्यास व शासन करने की प्रवृत्ति लोगों में बढ़ती गई वैसे-वैसे सत्ताओं के टकराहट से विश्व भर में अलग-अलग देशो का निर्माण होता गया। आज भी यह वर्चस्व व शासन सत्ता का संघर्ष खत्म नहीं हुआ है। अन्तराष्ट्रीय सीमाओं पर विवाद, उनमे झड़प व तना-तनी का मुख्य कारण सीमाओं का विस्तार ही तो है। विभाजन सत्ता संघर्ष की लड़ाई है। विश्व में आज भी देश व सीमाओं को लेकर लड़ाइयाँ चल रही है। यूक्रेन व रसिया की लड़ाइयाँ सालभर से ज्यादा समय हो गया और अभी ही लगातार चल रही है। यह क्या है ? सत्ता व शासन की ही तो लड़ाई है। लोग मारे जा रहे है। विस्थापित हो रहे है। उन पर आग की वर्षा की जा रही है। पर किसी को अपने सत्ता के समक्ष मनुष्य की यह बर्बादी नहीं दिख रही है। यह मनुष्य की दुर्दर जिजीविषा की दानवीय प्रवृत्ति है। मनुष्यता को बचाना और विश्व मे अमन-चयन कायम करना है तो इस अमानवीयता से बचाना होगा। ये आग व मौत बरसाने वाले मौत और हिंसक गोलो से बचाना होगा। मनुष्य की कीमत हमें समझनी होगी। वरना ये लड़ाइयाँ, घटनाए, अमानवीयता, बर्बरता, हत्या, विस्थापन, युद्ध, ये सब बंद होने के क्रम में नहीं होंगे। यह विकसित व बौद्धिक होते मनुष्य के विकास पथ की निशानियाँ नहीं बल्कि उसके पतन के ये राजमार्ग है। अगर वह इन पतन के राजमार्गों से हटता नहीं है तो मनुष्यता उत्तरोत्तर पतन को ओर और विश्व के निरंतर कलह की ओर अग्रसरता की यह निशानियाँ है। आज सम्पूर्ण विश्व को अमानवीय मूल्यों से बचाना

और मानवीय मूल्यों के रक्षा के लिए तत्परता से आगे बढ़ाना चाहिए। तब जा कर कहीं हम मनुष्यता को प्राप्त करेगे वरना आदिम मनुष्य से हमारा विकास तो वैसे ही हुआ है और वह अभी हमारे खून के अंदर धड़क रहा है। वही आदिम रक्तपिपास आज भी विभाजन का कारण बनी हुई है।

भारत के संदर्भ में विभाजन की जड़ें ब्रिटिश साम्राज्य में गहरी धसी हुई है। ब्रिटिश भारतीय सामाजिक संरचना को बहुत पहले समझ लेते है। यहाँ के अंतरविरोध को, उसके अंदरद्वन्द्व को समझ लेता है और इसकी साथ ही वह इसकी कमजोरी को भापता है कि इसको कहा से तोड़ा जा सकता है। और तब वह हिन्दू-मुस्लिम जैसा संप्रदायवादी धर्मपरक सोच की नींव रखता है। और यही जो एक नई कहानी की शुरुआत होती है। अभी तक जो शासन सत्ता के लिए लड़ रहे थे वे अब धर्म के लिए लड़ने लगे। जो एक साथ एक जुट होकर ब्रिटिश से लड़ रहा था वह अब आपस में ही लड़ने लगे या धर्म के नाम पे लड़ने लगता है। अभी तक जो एक जुट होकर ब्रिटिश से लड़ते थे अब वे आपस में ही लड़ने लगे। और एक दूसरे के दुश्मन बनना शुरू हो गए। और अंग्रेज इसके लिए बराबर जमीन तैयार करते रहे, उसमे खाद पानी डालते रहे। आगे चाल कर जिसका पूरा का पूरा लाभ उसे भारत के दो खंड करने में मिलता है। यहाँ हमे इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि 1947 के पहले भी ब्रिटिश 1905 ई. में बंगाल विभाजन कर चुके थे। छोटे देश या राज्य पर शासन करना ज्यादा आसान होता है। ब्रिटिश इसी फिराक में रहता था कि भारत के जीतने छोटे-छोटे हिस्से हो सकते है उस पर शासन करना आसान होता जाएगा। यह उनकी नीति थी। पर यह नीति उनकी बहुत दिनों तक न चल सकी और न ही सफल हो सकी। पर वे भारत को तोड़कर नयें मुल्क के रूप में पाकिस्तान का निर्माण जरूर किए।

ब्रिटिश के पहले भी भारत कई-कई धर्मों का संगम रहा है। पर इस तरह के विवाद कभी खड़े नहीं हुए की देश को धार्मिक आधार पर दो खंडों में करने की बात हो। लेकिन देश की दो सबसे बड़ी

कौमो को लड़ना यह ब्रिटिश की बड़ी नीति थी। और इन दोनों के मध्य संघर्ष करके वह अपनी शासन सत्ता को बचाएं रखना चाहता था जिसमें वह सफल नहीं हुआ। यह उसकी नीति की बड़ी परायज थी कि जिस आग से वह भारत को जलाएं रखना चाहता था। वही आग उसे खुद ही जला कर राख कर देती है। और उसे अपनी शासन सत्ता को यहाँ से उखाड़ कर ले जाना पड़ा। डॉ. चमनलाल कहते है कि "और 1947 क्या एक दिन में घट गया था ? इसके पीछे भी ब्रिटिश उपनिवेशवाद द्वारा 1857 के बाद लगातार समाज को धार्मिक आधार पर बांटने वाली नीतियों से बाकायदा सांप्रदायिक भावनाओं को एक निश्चित संगठनात्मक आधार प्रदान किया गया। बीसवीं सदी के शुरू से भारतीय समाज में सांप्रदायिकता के सांगठनिकरूप ग्रहण करने की प्रक्रिया के रूप ग्रहण करना शुरू किया। हिन्दू महासभा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, मुस्लिम लीग व अन्य मुस्लिम सांप्रदायिक संगठन इस बीच अस्तित्व में आए और इस संगठनों ने समाज में धार्मिक आधार पर घृणा व नफरत का व्यापक विषैला प्रचार आरंभ किया। पहले इस प्रचार ने बड़े शहरों व कस्बों में जड़े जमाई, फिर इसे सुदूर गांवों तक पहुंचाया गया। सदियों से मिल-जुलकर रहने वाले बहु-धार्मिक, समाज को नफरत से भरकर, सांप्रदायिक दंगों के लिए जमीन तैयार की।"1 आज यदि हम देखे तो हिन्दू धर्म या सनातन धर्म कई तरह के संगठनों में बटा हुआ है। तरह-तरह की सेनाएं, तरह-तरह के जातीय संगठन, धार्मिक संगठन ऐसे कई तरह के विभागों में बता हुआ है। समय-समय पर इनके बीच तो विवाद भी होते देखे जाते है आजकल तो।

विभाजन की मजबूत जड़ें राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के उत्तरवर्ती गतिविधियों के भीतर समाहित है। इसके लिए भी जिम्मेदार यही ब्रिटिश हुकूमत थी। क्योंकि यह कुछ भारतीयों को अपने पक्ष में ले लेती है और फिर उनसे सांप्रदायिक विचार धारा का निर्माण करवाती है। माहौल खराब करने के लिए। इसलिए आप देखेगें कि यहाँ आजादी के पहले से ही धार्मिक, सांप्रदायिक संगठन सक्रिय है। यह अंग्रेजों के सह से ही संभव होता था। आप देखेगें कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के फलस्वरूप

दो ऐतिहासिक घटनाक्रम हमारे सामने आते है। एक आजादी और दूसरा विभाजन। राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी स्वभाव व उसके प्रताप से हम आजाद होते है तो ब्रिटिश हुकूमत के छदमों से हम विभाजित। राष्ट्रीय आंदोलन के प्रताप से डरकर ब्रिटिश हुकूमत अपनी कुटिल नीतियों के चलते एक ऐसी साजिश रचती है कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ मिलकर लड़ने वाले हिन्दू-मुस्लिम तो धड़ों में टूट जाते है। और वे आपस में ही एक दूसरे को अपना दुश्मन समझने लगता है। एक दूसरे पर अविश्वास करने लगते है। यह ब्रिटिश साम्राज्य की एक सोची समझी रणनीति का परिणाम था। ब्रिटिश की इस सोची समझी सांप्रदायिक मानसिकता का शिकार उस समय के मुस्लिमों के सबसे बड़े नेता मुहम्मद अली जिन्ना जाने-अनजाने में हो जाते है। इसके पीछे जिन्ना के कुछ अपने व्यक्तिगत स्वार्थ भी हो सकता हो रहे हो। पर इसका परिणाम यह होता है कि स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई कमजोर पड़ती है, और साथ ही साथ इस आंदोलन में एक नया बिन्दु जुड़ जाता है और वह है विभाजन व पाकिस्तान की मांग का। स्वतंत्रता संग्राम के बीच से उपचे इस अप्रत्याशित मांग से आंदोलन की दिशा बदल जाती है। जिसके चलते नफरत, मुस्लिमों का हिंदुओं के प्रति शंकितभाव, सांप्रदायिकता जैसे अवमूल्यों का जन्म होता है। और हिन्दू-मुस्लिम में आपसी वैमनस्य बढ़ने लगता है। उनमे दूरियाँ आती है। और इसी समय धर्मवादी संगठनों का गठन होता है। इसमें हिंदुयों के हिंदुतत्व वाले और मुस्लिमों के इस्लामिक संगठनों का भी अहम रोल है। उनकी गतिविधियां उनकी विचारधारा, आदि हिन्दू व इस्लाम केंद्रित होने लगे थे। जिसमें हिंदुओं के हिंदुतत्व वादी संगठन ज्यादा मजबूत सिद्ध हुए। जिसके प्रभाव से मुस्लिमों मे कहीं न कहीं यह डर पैदा कर रहा था की आजादी के बाद मुस्लिमों के साथ भेदभाव पूर्ण व्यवहार किया जाएगा। इस प्रक्रिया में हिन्दू और अधिक हिन्दू और मुसलमान और अधिक मुसलमान होता चला जाता है। और मुस्लिम लीग व मुसलमान नेताओ के द्वारा पाकिस्तान की मांग दिनों-दिन बढ़ती चली जाती है और परिस्थितियाँ दिनों-दिन जटिल होती जाती है। जिन्हे

संभालपाना संभव नहीं हो सका और अंत में एक अखंड हिंदुस्तान दो धड़ों में टूट जाता है। यह ब्रिटिश की छद्म नीति, उनकी कुटिलताओं की जीत व अखंड हिंदुस्तान की हार भी है। यह सिर्फ देश की सीमाओं का विभाजन नहीं था बल्कि यह देश की अखंडता, एकता, भाईचारे, सभ्यता-संस्कृति का भी विभाजन था। और इस विभाजन से जो हैवानियत, दरिंदगी, पशुता जन्मी वह इंसानियत को छत-विछत, लहूलुहान व नोच खाने को तैयार थी। यह इसकी क्रूरतम परिणिती थी। इसमें अमन पसंद जनता नहीं बल्कि ब्रिटिश चाटुकारिता करने वाले दोनों पक्षों के सांप्रदायिक लोग शामिल थे। यह उनकी विभाजित मानसिकता का परिणाम था। जिसमें एक साथ दो लड़ाइयाँ लड़ी गई एक लड़ाई आजादी की दूसरी विभाजन व नए मुल्क के रूप में पाकिस्तान की मांग की लड़ाई। जिसमें ब्रिटिश की फुट डालों और राज करो की नीति सफल हुई और जिन्ना उनके मोहरें बने। इस दंश से, इस त्रासदी से अखंड हिंदुस्तान कराह उठा था। बाद में भी रह-रह कर इसका प्रकट्य कभी सिख विरोधी दंगे, कभी भिवंडी मुंबई के दंगे, तो कभी बाबरी मस्जिद ध्वंस के रूप में होता रहा है। यानी कि तब से इसका सिलसिला बंद नहीं हुआ बल्कि कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में दिख ही जाता है।

14 अगस्त 1947 की रात भारतीय इतिहास में जहां एक तरफ खुशियों की रात थी वही दूसरी तरफ अपने ही लोगों के लिए यह किसी काली रात से कम नहीं थी। 15 अगस्त 1947 की सुबह उजड़ने व बसने की सुबह थी। इसी रात को अखंड भारत दो टुकड़ों मे बट जाता है और विश्व के नक्शे पर एक नए राष्ट्र के रूप में पाकिस्तान का नाम दर्ज होता है। यह बटना देश का बटना तो था की लेकिन उससे ज्यादा दिलों का बटना था, भावनाओं का बटना था, रिश्तों का बटना था, अपनी मातृभूमि, जन्मभूमि से बटना था, अपने घर-गली मोहल्लों से बटना था, इस तरह से बट जाना यह आम लोगों के लिए सामान्य बात नही थी। यह उनके उजड़ने व बसने, जीने व मरने का सवाल था। बर्बरताओं को, जुल्म को सहने का समय था। स्त्रियों को अपनी अस्मत, अपनी

आबरू बचाने का समय था। इतिहास के पन्नों में दर्ज यह भारत-पाक विभाजन के नाम से एक अंतरराष्ट्रीय घटना है। साथ ही बीसवीं शताब्दी में घटित दो विश्व युद्धों के बाद यह विश्व की तीसरी सबसे बड़ी ऐतिहासिक घटना थी। जिसमें लाखों लोग मारे जाते है। करोड़ों लोगों का विस्थापन होता है। और स्त्रियों की अस्मत खुले आम लूटी जाती है। शहर की बस्ती की बस्तियां जला उठती है। यह सब अमानवीय था दुर्दान्त था। चमनलाल जी ने लिखा है कि "1947 के भयावह सांप्रदायिक दंगे,देश की आजादी की कीमत रूप में चुकाई गई- छह लाख इंसानों की बलि के साथ, एक लाख स्त्रियों के साथ हर प्रकार के अमानवीय व पशुतापूर्ण अत्याचारों के साथ व एक करोड़ जनसंख्या के अभूतपूर्व विस्थापन के साथ। 1947 के पचास वर्ष बाद आजादी की स्वर्ण जयंती का उत्साह सिवाय टेलीविजन के पर्दे व प्रायोजित सरकारी समारोहों के अतिरिक्त कहीं नहीं हैं।"2 यह आकडे इतने ही नहीं होंगे और भी होंगे।

सांप्रदायिकता व विभाजन जीतने सामाजिक विषय है उससे कई गुना ज्यादा यह ऐतिहासिक विषय है। साहित्य में इसकी जितनी गूंज है इससे कई गुना ज्यादा इसकी गूंज इतिहास में है। नफरत किसी से कभी प्रेम नहीं कर सकती। जो धर्म के नाम पर हिन्दू या मुसलमान से नफरत करता फिरता रहता है वह अपनों के बीच जातिवाद, क्षेत्रवाद, ऊंच-नीच इत्यादि भेदों के आधार पर वह अपने लोगों से भी नफरत करता रहता है। उसका नफरत हर जगह कायम रहेगा वह कहीं भी रहे। तो नफरत करने वाला किसी से प्रेम नहीं कर सकता है।

भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम की कोख से जन्मा यह विभाजन भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम की विजय के साथ, हारती हुई एवं हताश ब्रिटिश हुकूमत की हार व उसकी कुटिलता का परिणाम यह विभाजन है। जिससे वे अपने हार को भी विजय के रूप में देखते है। यह ब्रिटिश हुकूमत की कुटिल जीत का प्रतीक है तो भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के नैतिक हार का भी प्रतीक बन गया है। देश के भीतर नेताओं में दो विचार धारा को भर दिया गया। और यह काम

वे नफरत से करते है। नफरत का बीज बोने में वे कामयाब रहे। जिससे विभाजन की प्रकृति व प्रवृत्ति बरबरता की और परिणिती त्रासद पूर्ण रही है। यह विभाजन भारतीय समाज के स्वभाव के प्रतिकूल अप्रत्याशित घटना थी। भारतीय समाज सदियों से शांति, अहिंसा, भाईचारे, एकता, सहृदयता के लिए मान्य समाज रहा है। जिसकी मिट्टी शांति, सत्य और अहिंसा की मिट्टी है। जिसमें बुद्ध, महावीर जैन, कबीर, नानक, अंबेडकर और महात्मा गांधी जैसे मानवतावादी महापुरुषों का संदेश गूंज रहा है। वह मिट्टी अचानक खून से लाल हो उठी। हत्या, बलात्कार, लुट, आगजनी, अमानवीयता से धधक उठी। नदियों में पानी का रंग लाल हो उठा। चीखों-चीत्कारों से कान फटने लगे। मनुष्य-मनुष्य न रहकर शरणार्थी बन गया। उसकी प्रवृत्तियाँ पाशविक हो गई। तथा इंसान-इंसान से नफरत करने लगा। इस विभीषिका व त्रासदी से मनुष्यता तार-तार हो उठी। यह विभाजन का दर्द था। यह विभाजन की अमानवीय दृश्य था। जिसे जनता ने अपने कंधों पर ढोया।

इस तरह हम कह सकते है कि विभाजन आजाद होते भारत व बनाते हुये पाकिस्तान के लिए ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा प्रदत्त एकदम नयी व गंभीर समस्या के रूप में मिला। यह विभाजन कोई सामान्य घटना य वाकया नही बल्कि इतिहास के पन्नों पर दर्ज एक काला पृष्ठ है। जो लाखों करोड़ों दिलों का रक्त रंजीत इतिहास बया करता है। जिसमें न जाने कितने दंगा, लुट, बलात्कार, हत्या, आगजनी, उजाड़-बसाव, व मौतों का तांडव नृत्य मौजूद है।

हिन्दी साहित्य में विभाजन को आधार बनाकर प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन किया गया है। साहित्य में इसे सांप्रदायिकता के रूप में भी चिह्नित किया गया है। यदि हम इन दो शब्दों पर गौर करे तो विभाजन व सांप्रदायिकता दो भिन्न-भिन्न बातें है। विभाजन जहाँ क्रियात्मक है सांप्रदायिकता वहीं बोधात्मक। सांप्रदायिकता एक सोच है, जो धार्मिक व सांस्कृतिक मतभेदों को बढ़ाकर अपने उद्देश्य की पूर्ति करती है। कोई भी समाज एक साथ रहते हुए सांप्रदायिक हो सकता है यह उसका विचार बोध है किन्तु वह विभक्त हो यह जरूरी नही है। सांप्रदायिकता अपना हथियार धर्म व

संस्कृति को सबसे अधिक बनती है। क्योंकि सामान्य जनमानस का मन उसी धर्म व संस्कृति में अधिक रमता है। और सांप्रदायिक ताकते अपने लाभ के लिए इन धार्मिक व सांस्कृतिक विषयों को ही अपना हथियार बनती है। राजनीतिक दुरुपयोग इसका बहुत बढ़ गया है। सामान्य लोगों की भावनाओं को भड़काना, सांप्रदायिक उन्मेषों को बढ़ावा देना, उन पर चर्चा-परिचर्चा करना, टीका-टिप्पणी करना, सांप्रदायिक संगठन तैयार करना, सांप्रदायिक जगहों में विवाद पैदा करना और उन्हे सामान्य लोगों से जोड़ना, यह सब एक बहुत ही शातिराना व अपराधपूर्ण राजनीति का हिस्सा बन चुका है। जिससे लोगों की भावनाओं को भड़काकर राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है। यह उस विभाजन से जुड़ी हुई विभाजित मानसिकता ही है। और जो भी इन कार्यों को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग दे रहा है वह निश्चित ही मानसिक दिवलियें व सांप्रदायिकता का शिकार हुआ है।

विभाजन का अर्थ व परिभाषा

किसी अखंड इकाई के टुकड़े करना ही विभाजन है। राष्ट्र के संदर्भ में यह एक अखंड राष्ट्र के दो टुकड़ों में बाटने की क्रिया को ही विभाजन कहाँ कहा। जब कोई अखण्ड राज्य जाति, धर्म, सम्प्रदाय या नस्ल के नाम पर दो खंडों (दो भूभागों) में विभक्त हो जाएं है और उनके मध्य एक अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा खींच दी जाती है, उसकी सरहादे बना दी जाएं तो उसे विभाजित राष्ट्र कहते है। पाकिस्तान भारत से टूटा हुआ एक विभाजित राष्ट्र है।

किसी राष्ट्रीय समाज में इंसान की पहचान जब उसके जाति, धर्म या संप्रदाय से होने लगे और सामान्य जनमानस जाति, धर्म या संप्रदाय के लिए आपस में लड़ने लगे, वैमनस्य रखने लगे या अपने लिए अलग-अलग व्यवस्था की मांग करने लगे या अलग मुल्क की मांग करे और वह हो

कर रहे जिसका आधार संप्रदाय, जाति या धर्म हो तो उसे सांप्रदायिक विभाजन करते हैं। इन अर्थों में भारत-पाक विभाजन एक सांप्रदायिक विभाजन है।

सांप्रदायिक विभाजन में दो परस्पर अलग-अलग संस्कृतियों की टकराहट बिल्कुल आमने-सामने से होती है। यही कारण होता है कि उनमें विवाद निरंतर गहराता चला जाता है। उनमें आपसी भाईचारें, समन्वय की भावना, प्रेम सब कुछ ईर्ष्या में बदलता चला जाता है। एक दूसरे की अविश्वास की नजर से देखते है। और दोनों अपने-अपने पक्ष में दलीले दिया करते है। सांप्रदायिकता की कुछ प्रमुख परिभाषाएं निम्न है-

डॉ. शिव कुमार मिश्र के अनुसार "सांप्रदायिकता मूलतः एक राजनीतिक विचारधारा है, जिसका जन्म हिन्दू-मुसलमान अभिजात वर्ग की राजनीतिक सत्ता पाने की प्रतिस्पर्धा के तहत हुआ है। वह धार्मिक, सामाजिक या आर्थिक समस्या नही है।"3

डॉ. रामदेव शुक्ल "सांप्रदायिकता की समस्या मुख्यतया मानसिक विकृति की समस्या है, जिसकी जड़े हमारे भारतीय परिवेश में सर्वत्र फैली है। यह किसी संप्रदाय विशेष की चिंता नही वरन सम्पूर्ण राष्ट्र के चिंता का विषय है।"4

डॉ. सुभाष दुरुगवार "सांप्रदायिकता सत्ताधारी पक्ष की वर्गीय राजनीति का यह एक हथियार है।"5

रामजी यादव "सांप्रदायिकता को एक विचारधारा माना जा सकता है जो कि यह बताती है कि समाज धार्मिक समुदायों में बंटा हुआ है, जिनके स्वार्थ एक दूसरे से भिन्न है और कभी-कभी उन में पारस्परिक विरोध भी होता है। एक समुदाय के सदस्य जो दूसरे समुदाय के सदस्य और धर्म के विरुद्ध प्रतिरोध करते है उन्हे सांप्रदायिक कहाँ जा सकता है।"6

डॉ. विलफ़्रेड स्मिथ “सांप्रदायिकता अथवा जमातवाद एक ऐसी विचारप्राणाली है जिसमें अलग-अलग धर्म माननेवाले समाज समूह के स्वरूप को इन के धर्म के आधार पर ही स्वतंत्र-सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक गुट के रूप में प्रस्तुत करने का जोर से प्रयास किया जाता है। इस अलगाववाद का समर्थन करने के लिए इन समूहों के आपसी वैषम्य, भेद और वैमनस्य को प्रखरता के साथ प्रगट किया जाता है।”7

डॉ. वीरेंद्र यादव जी ले लिखा कि, “भारत विभाजन..इतिहास का बंद अध्याय न होकर वर्तमान की एक खुली किताब है।”8

राजेन्द्र यादव जी लिखते है कि, "युगों-युगों की पराधीनता के बाद किसी देश का स्वतंत्र होना ही अपने आप मे बहुत बड़ी घटना हैं, फिर अपने यहाँ तो इस घटना के साथ ही देश का विभाजन भी जुड़ा है।.....वे सारी हत्यायें और नृशंसताएँ भी जुड़ी हैं,....जहाँ पिछला सब कुछ, सभी कुछ भस्म हो गया....अच्छा भी और बुरा भी....तेजी से विघटित होते जीवन-मूल्यों के भूकम्प जुड़े हैं।"9

इस प्रकार से यदि हम कहना चाहे तो कह सकते है कि सांप्रदायिकता वह मानसिक विकृति है, जो मनुष्य-मनुष्य में भेद-भाव पैदा करती है। और उसमें नफरत के भाव को प्रबल करती है। जो मूलतः एक राजनीतिक समस्या होते हुए आज के दिन वह एक भयंकर सामाजिक समस्या बन चुकी है।

हिन्दी साहित्य में विभाजन की समस्या पर केंद्रित प्रमुख उपन्यास

विभाजन या सांप्रदायिकता को आधार बनाकर हिन्दी साहित्य में उपन्यास व कहानियाँ खूब लिखी गयी है। बल्कि न केवल हिन्दी भाषा में बल्कि इसके अतरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में भी प्रचुर मात्र में लिखा गया है। साथ ही अंग्रेजी में भी लिखा गया और हिन्दी में लिखे गए उपन्यासों व

कहानियों की अन्य भाषाओं में अनुवाद भी हुआ। सांप्रदायिकता को आधार बनाकर लिखने वाले हिन्दी लेखकों में यशपाल, भीष्म साहनी, राही मासूम रजां, अब्दुल विस्मिल्लाह, मंजूर एहतेशाम, कमलेश्वर, कृष्णा सोबती, गीतांजलि श्री, विभूतिनरायण राय, नासिर शर्मा, दूधनाथ सिंह इत्यादि का नाम प्रमुखता के साथ लिया जाता है। प्रमुख उपन्यासों का परिचयात्मक विवरण निम्न लिखित है।

झूठा-सच

झूठ-सच हिन्दी के श्रेष्ठ प्रगतिवादी उपन्यासकार यशपाल का उपन्यास है। जो विभाजन को केंद्र में रखकर लिखा गया है। यह उपन्यास अपने मूल संवेदना में सामाजिक जटिलता के साथ समाज में फूट, कट्टरता व सांप्रदायिकता के जो तत्त्व है उन पर गहरा विचार व विश्लेषण करता है। पूरा उपन्यास दो भागों में विभक्त किया है। जिसमें पहला खंड 'वतन व देश' के नाम से 1958 ई. में प्रकाशित हुआ तो दूसरा भाग 'देश का भविष्य' नाम से 1960 ई. में प्रकाशित हुआ। प्रथम खंड वतन व देश में मुख्य रूप से लाहौर के भोला पांधे की गली में रहने वाले परिवारों के माध्यम से सांप्रदायिक व उन्माद का चित्रण किया गया है, साथ ही साथ विभाजन के बाद उत्पन्न शरणार्थियों की समस्या का भी चित्रण है।

द्वितीय खंड में मुख्य बात देश के निर्माण में होने वाली भूल, नेताओं की भ्रष्टता व मध्यवर्ग की पीड़ा का चित्रण बड़े ही संवेदनात्मक रूप में किया गया है। इस खंड में लेखक का ध्यान अतीत व वर्तमान से अलग भविष्य की ओर गया है। उसको देश के भविष्य की चिंता है। उन्मादी व विभाजित शक्तियों के समक्ष उसने बार-बार प्रश्नचिह्न लगाया है। राम दरश मिश्र लिखते है कि, "लेखक ने देश के बटवारे के समय और उसके पूर्व व पश्चात की सांप्रदायिक विभीषिका मे जलते हुए भारत और पाकिस्तान की जन-यातना का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है। देखने में लगता है

कि दोनों देशों की जनता स्वभावतः अपने सांप्रदायिक विद्वेष की आग मे धधक उठी थी। किन्तु यह होकर भी झूठा था। सच थी जनता को बरगलाकर अपने को तृप्त करने वाली राजनीतिक नेताओं की अदम्य, अमानवीय प्यास।"10

यशपाल ने विभाजन के पहले की उस सारी गंदी राजनीति का, अवसरवाद का, राजनीतिक नेताओं के छदम का और उसके भीषण परिणामों का यथार्थ खुलासा उपन्यास मे किया है। सदियों से एक साथ रहने वाले एक दूसरे से गले मिलने वाले कैसे एक दूसरे के प्राणों के दुश्मन हो जाते है। एक दूसरे का खून बहाते है। एक दूसरे की इज्जत को लूटते है। आग के हवाले कर देते है। गोली-बारूद से भून देते है। इस तरह इस पूरे उपन्यास में मनुष्य के हैवानियत का, उसके पतन का, उसकी खूंखार प्रवृत्तियों का जीता जागता चित्रण किया गया है। लेखक को उम्मीद है की भविष्य में बेहतर होने की आशा रखी जा सकती है। और इसकी आशा लेखक करता भी है।

हिंसा किस तरह से अराजकता की तरह फैली हुई है। उपन्यास में वह कुछ इस तरह से दर्ज है सांप्रदायिकता हमेशा असहाय लोगों को ही निशान बनती है। उसका काम ही है लोगों में खौफ भरना, दहशत फैलाना। इस मानसिकता से ग्रसित लोग सामान्य लोगों को मनुष्य नही समझते है। बल्कि उन्हे वे जब चाहते है तब उसका उपयोग वे अपने लाभ-हानि की दृष्टि से कर लेते है।

दोनों पक्षों की स्त्रियाँ इस विभीषिका में सबसे ज्यादा शिकार हुई थी । तारा कहती है कि, "उसने ही नहीं असंख्य नारियों ने पुरुषों की पाशविकता को सहा है। पुरुष को मनुष्य बना सकने के लिए स्त्री को कितना सहना पड़ेगा ?...सब जुल्म के लिए हम स्त्रियों ही रह गई है। मर्द-मर्दों को काटकर टुकड़े भले ही कर दे, उनकी बेइज्जती तो नही करते।"11 यह सब वे दृश्य है जो मनुष्य की मनुष्यता पर सवाल खड़ा कर रहे है। दरअसल सांप्रदायिकता का सवाल ही मनुष्य के मनुष्य होने का सवाल है। हर जगह यही दृष्टि दिखाई पड़ती कि हम कितने मनुष्य और हम कितने हैवान हो

चुके है। इसमे मुख्य सवाल यही है। वीरेंद्र यादव लिखते है कि, "सच तो यह है कि झूठ सच एक औपन्यासिक कृति मात्र न होकर विभाजन के दौर और उसके बाद के भारतीय समाज व राजनीति का कालजयी दस्तावेज है। कई अर्थों मे यह भारत विभाजन के सुपरिचित विमर्शों व प्रभुतत्वशाली चिंतन का प्रतिपक्ष भी है।"12

विभाजन के पूर्व की पंजाब की स्थिति, वहाँ के जनसमाज का मानसिक गठन, देश का विभाजन, राजनीतिज्ञाओं के दाव-पेच, विस्थापितों की दुर्दशा, सांप्रदायिक संकीर्णता व तनाव, निम्न मध्यवर्गीय जीवन की अव्यवस्था, भीषण नरसंहार, निम्न मध्यवर्ग का नैराश्य, मनुष्यता के आवरण के भीतर दबी हुई पशुता का तांडव, उच्चवर्ग की स्वार्थपरता, स्वतंत्रताप्राप्ति के बाद का समाज और उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार, उनकी अक्षय जीवनीशक्ति, आदि सब कुछ इसमें यथार्थ रूप में चित्रित हुआ है।

झूठ सच उपन्यास अपने आप में गंगा-जमुनी तहजीब कहनेवाले, हिन्दू-मुस्लिम, सिख, ईसाई सबको भाई कहने वाले साझी संस्कृति व साझी विरासत कहने वाले समाज के मुंह पर एक झन्नाटे दार थप्पड़ है। जो पूरी एकता-अखंडता की विरासत को तोड़कर एक विषाक्त व जहरीले विभाजित सांप्रदायिकता में बदल जाती है।

तमस

तमस का सामान्य अर्थ अंधेरा या अंधकार होता है। यह प्रतीक है, समाज में व्याप्त अंधेरे का। किसका अंधेरा तो सांप्रदायिकता, विभाजित मानसिकता, हत्या, लूट, आगजनी, बलत्कार यह पाशविकता जो समाज में व्याप्त है। यह समाज का तमस है। समाज का अंधकार है। समाज इससे आच्छादित है। यही तमस का तमस है। इस तमस उपन्यास के लेखक भीष्म साहनी है। यह उपन्यास सन 1973 ई. में प्रकाशित हुआ था। तमस उपन्यास मे आजादी के पूर्व की पाँच दिनों के सांप्रदायिक घटनाओं, वातावरण, सांप्रदायिक मानसिकता, सांप्रदायिकता को तैयार करने की

कैसे-कैसे कोशिशें की जाती है वह सब पाँच दिन की घटनाओं के भीतर कैद कर लिया गया है। तमस इतिहास के उस अंधेरे पक्ष का इतिहास है जहाँ प्रेम में नफरत बसती है। जहाँ विश्वास में भी भय दिखता है, जहाँ सहयोग में भी अनिष्ट की आशंका दिखती है। यह तमस है। जहाँ सब कुछ समय के साथ नफरत में बदल जाता है। इस तरह इसमें दिखया गया की किस तरह से विभाजित मानसिकता काम करती है।

तमस के विभाजन के सूत्र अंग्रेजी डिप्टी कलेक्टर रिचर्ड और मुराद अली के हाथों में है। यही दंगा करने से लेकर के दंगाई गतिविधियों को गति देते है। उनका पूरा खाका तैयार करते है। तमस का विभाजन अंग्रेजी बनाम हिन्दुस्तानी और सांप्रदायिक बनाम राष्ट्रवादी का है। इसमें रिचर्ड की फुट डालों और राज करो की नीति भी जबरदस्त रूप में है। इसी बात की ओर ध्यान खिचते हुए भीष्म साहनी जी कहते है कि, "फ़साद करवानेवाला भी अंग्रेज, फ़साद रोकनेवाला भी अंग्रेज, भूखों मारनेवाला भी अंग्रेज, रोटी देनेवाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करने वाला भी अंग्रेज, घरों में बसाने वाला भी अंग्रेज।"13 यानी अंग्रेज ही माई-बाप व भाग्य विधाता है। हमरे जीवन की बागडोर उसके हाथों में है। तमस में जो दंगे फ़साद हो रहे है वे सब प्रायोजित है। वह सांप्रदायिकता के लिए ही किये जा रहे है। लेखक ने यह समझाने की कोशिश की है कि इंसान न हिन्दू है न मुसलमान वह सिर्फ इंसान है। जिस दिन मनुष्य को यह समझ आ जाएगी की वह सिर्फ और सिर्फ मनुष्य है उस दिन विवाद के सारे झगड़े खत्म हो जायेगे। अच्छाई-बुराई समान रूप से दोनों में है और कोई भी धर्म हिंसा, हत्या, बलात्कार, जघन्य कृत्यों को इजाजत नही देता। इस परिस्थितियों में रहते हुए कोई भी सामान्य मनुष्य किसी धर्म में आस्था रखते हुए सांप्रदायिक नही हो सकता। उन्हे सांप्रदायिक बनाया जाता है। उन्हे परिस्थितियाँ दे कर। जिसमें राजनीति, सामाजिकता, स्वार्थपूर्ति के लिए उनका इस्तेमाल किया जाता है। और फिर एक धर्म को दूसरे के खिलाफ भड़काया जाता है। नफरत का जहर पिलाया जाता है। उनके दिमाग में उन्मादी भावनाएं भरी जाती है। उनमें डर

पैदा किया जाता है। एक दूसरे के प्रति डर का माहौल तैयार किया जाता है। यह धर्म व राजनीति का विकृत रूप भी है। जिसकी इजाजत इंसानियत नही देती है।

इन्ही सांप्रदायिक परतों को खोलते हुए भीष्म साहनी जी ने साहस के साथ तमस लिखा। तमस का सामान्य अर्थ भी अंधेरा ही होता है। यह अंधेरा है मनुष्यता पर। उस मनुष्यता, उस समाज पर जिसमें अंधेरे के रूप में जातीयता, धार्मिकता, सांप्रदायिकता, नफरत, हत्या, लूट आदि व्याप्त है। जिसमें नफरत का अंधेरा हो। जो समाज के अमन-चयन, एकता, अखंडता, भाईचारें, आपसी विश्वास सबको निगल गया है। ऐसा तमस है। जिसमें पूरा देश धधक उठा है। यह शिलशिला आज भी खत्म नहीं हुआ है। किसी न किसी रूप में कहीं न कहीं दिख ही जाता है। यह एक गंभीर समस्या व सवाल भी है।

लिजा का उपन्यास मे आया एक कथन बहुत कुछ बया करता है कि हमारी विडंबना क्या है। वह रिचर्ड से कहती है कि देश के नाम पर ये लोग तुम्हारे साथ लड़ते है, और धर्म के नाम पर तुम इन्हे आपस में लड़ाते हो। यह समस्या कहाँ है। सामाजिक संरचना में या मानसिक संरचना में यह बात समझी जानी चाहिएं। और शायद लेखक इस बात से इसी ओर इसरा भी कर रहा है।

तमस उपन्यास में केवल विद्वेषों को नही दिखाया गया है। इस नफरत व विद्वेष के बीच भी इंसानियत बसती है। तमस में यह इंसानियत सामाजिक सदभाव दिखाते है सोहन सिंह और मीरदाद। ये किसी प्रकार का दंगा फ़साद नही चाहते है और ये दोनों तरफ से अमन-चयन की कोशिश करते है। लेकिन उनकी कोशिशें नाकाम ही होती है। नफरत से आगे परम को बचा पाना बड़ा ही कठिन कार्य है। और शहर में जनरैल सिंह की हत्या व वृद्ध इत्रफ़रोश मुसलमान की हत्या होती है। इसी तरह बलदेब खून का बदला खून कहते हुए करीम बख्श की हत्या कर देता है। और हर जगह से हर हर महादेव, अल्लाहों अकबर, सत सिरी अकाल के नारे लगते है। इन धार्मिक

आस्था के मंत्र कैसे सांप्रदायिक हो जाते है, कैसे सांप्रदायिकता में बदल जाते है। इसको हम इस उपन्यास में देख सकते है।

सूखा बरगद

वर्तमानकालीन परिस्थतियों में सांप्रदायिकता की समस्या अत्यंत जटिल व बहुत सरल दोनों रूपों में व्याप्त है। किसी भी व्यक्ति की परिस्थितियों को, शिष्टाचार भेट को, आपसी प्रेम को कब सांप्रदायिकता, कटुता को बढ़ाने वाली साजिशों को कब देश भक्ति और राष्ट्रीयता का जामा पहना दिया जाए और कब किसे सांप्रदायिक करार कर दिया जाएं कुछ भी कहाँ नही जा सकता है। इस लिहाज से यह बड़ा जटिल समय है। और कुछ सांप्रदायिक ताकते अपनी पूरी ताकत के साथ सक्रिय है। आज के राजनीति में भी सांप्रदायिकता अपने पूरे वजूद के साथ फैली हुई है। यह एक देश के भीतर का दोहरा चरित्र भला किस रूप में राष्ट्र के संपन्नता का द्वार खोल सकते है। यह कह पाना बड़ा ही कठिन है कि आखिर ये कौन सी ताकते है जो देश की जनता को हमेशा ध्रुवों में ही देखना चाहते है। यह एक राजनीतिक झलवा है। यह राजनीतिक लाभ के लिए विकसित किया गया नया नजरिया है।

सूखा बरगद उपन्यास के लेखक मंजूर एहतेशाम है। यह उपन्यास सन 1986 ई. में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास के केंद्र में एक ऐसा मुस्लिम परिवार है जो निम्न मध्यवर्ग का है। जिसके मन में विभाजन के बाद उठने वाले अल्पसंख्यक सवालों की परेशानियाँ है, असुरक्षा का भाव आता है तो और दूसरी तरफ है सामाजिक बंदिशे जो उनके जीवन स्रोत को सूखाती चली जाती है। परिवार के लोग असुरक्षा के भावबोध के कारण सब अपनी अस्मिता की खोज में लगे है। जिसमें अब्बू, अम्मी, रशीदा, सुहेल सब कहीं न कहीं उलझे हुए है।

आधा गांव

आधा गाँव उपन्यास के लेखक राही मासूम रजा जी है। यह उपन्यास सन 1966 ई. में प्रकाशित हुआ था। इसके प्रकाशन के बाद ही राही जी एक बड़े उपन्यासकार के रूप में मान्य हो जाते है। उपन्यास की विषयवस्तु विभाजन व सांप्रदायिकता है। जिसके केंद्र में गाजीपुर का गंगौली नामक गाँव है। गंगौली गाँव की विभाजन के समय क्या स्थिति है। वहाँ सांप्रदायिकता की लहर कैसे आती है। उसमे बड़े कद के नेताओं की क्या भूमिका है। और इस विभाजन व सांप्रदायिकता से परे उस गाँव की सामाजिक, धार्मिक संरचना क्या है। कैसे चली आ रही है। उसमें पहले से ही कितना अंतर्विरोध, कितना तनाव, दबाव, शोषण व्याप्त है लेखक उसे बड़े ही सधे ढंग से अभिव्यक्त किया है। किन्तु विभाजन के समय हर किसी को एक नया मुद्दा मिल गया है। अब वे उन्ही चीजों को लेकर के चिंतित है। एक कथन है कि, "हम ऐसे मुल्क में रहते है जिसमें हमरी हैसियत दल में नमक से ज्यादा नहीं है। एक बार अंग्रेजों का साया हटा तो ये हिन्दू हमें खा जाएंगे। इसलिए हिन्दुस्तानी मुसलमानों को एक ऐसी जगह की जरूरत हैं जहाँ वे इज्जत से जी सकें।... मुसलमानों को यह एकदम से पनाहगार की जरूरत क्यों आ पड़ी है। और अंग्रेजों का वह साया कहाँ है... गंगौली में तो अब तक कोई अंग्रेज देखा नही गया था। और जब अंग्रेज हिंदुस्तान में नही आए थे, तब आखिर हिंदुओं ने मुसलमानों को क्यों नही मार डाला? और बुनियादी सवाल यह था कि जिंदगी-मौत खुदा के हाथ में है या अंग्रेजों और जिन्ना साहब के हाथ में ?"14 इस कथन में कई सारे भाव, कई उलझने, कई उलझनों के हाल, कई प्रश्न एक साथ जुड़े हुए है और अंग्रेजों की इसमें कितनी अहम भूमिका है यह भी स्पष्ट हो रहा है। विभाजन के समय लोगों की मनःस्थितियाँ क्या थी। उनकी भावनाएं फुटकर कैसे बाहर निकल रही थी। यह उपन्यास विभाजन के साथ और भी कई सवाल करता है। वह देखता है कि मुस्लिम समाज भी अपने आंतरिक स्तर पर कई सारे भेदभाव लिए चल रहा है। लेखन ने उसे इन उपन्यास में सुन्नी बनाम शिया करके दिखया है। अर्थात इसका प्रतिपाद्य यह है की क्या पाकिस्तान बनाने से यह सुन्नी व शिया का विवाद खत्म

हो जाएगा या यू ही बना रहेगा। अगर बना रहता हा तो पाकिस्तान मे कौन से मुस्लिम रहेगे। सुनी या शिया। उर अगर दोनों है तू जो विवाद यहाँ खड़ा किया गया है वह विवाद, शोषण, भेदभाव सब कुछ तो बना ही है। यहाँ हिन्दू-मुसलमान दोनों मिलकर करेगे वहाँ सिर्फ मुसलमान करेगे। यह सवाल रही जी ने बड़े ही वेबकी से उठाया है। यह उपन्यास समाज के उस समांतवादी सोच को उजागर करता है जो गरीबों, किसानों का अपने हित में अपने लाभ- हानि के हिसाब से उसका प्रयोग करते है। उन्हे न हिन्दू से मतलब होता है न मुसलमान से बल्कि उन्हे सिर्फ मतलब होता है अपने काम से। यह जो फर्क है। इस फर्क को। इस भेद को उपन्यास बिल्कुल स्पष्ट करता चलता है।

इस उपन्यास में लेखक ने स्वतंत्रता के पहले व बाद के विभाजन की पृष्ठभूमि का उसकी परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण किया है। विभाजन को बढ़ावा देने वाली तथा उससे उपजी स्थितियों का निरूपण लेखक बड़े सहज रूप में किया है। भाषा का सवाल, सामंतवाद का सवाल, भेदभाव का सवाल, जमींदारी का सवाल इत्यादि सवालों को लेखक ने बड़े ही तार्किक तरीके से उठाया है। हकीम साहब कहते है कि, “एक ठो बेटा रहा...ओ पाकिस्तान चला गया। एक ठो जमींदारी रहीं, ओहू को समझो की पाकिस्तान चली गई।”15 वीरेंद्र यादव जी लिखते है कि, “विभाजन और भारतीय मुसलमान के प्रसंग में राही मासूम रजा आधा गाँव में जो पूरा विमर्श प्रस्तुत करते है, वह एक उपन्यास भर न होकर उस भारतीय मुसलमान का सामाजिक व राजनीतिक बयान है जो पाकिस्तान के रथ पर आरूढ़ होने के बजाय उसके पहियें तले लहूलुहान हुआ था।”16 यदि विभाजन के बारीकियों में जा कर देखे तो विभाजन सभी तरह से व्यक्ति व समाज को कमजोर करने का एक शसख्त माध्यम है। व्यक्ति सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक सभी तरह से जर्जरित होता है।

इन सबके अतरिक्त हिन्दी साहित्य में लिखे गए अन्य उपन्यास इस प्रकार है।

अब्दुल बिस्मिल्लाह का 'झीनी झीनी बीनी चदरिया', विभूतिनरायण राय का 'शहर में कर्फ्यू', गीतांजलिश्री का 'हमारा शहर उस बरस', दूधनाथ सिंह का 'आखिरी कालम', नासिरा शर्मा का 'जीरों रोड', खुशवंत सिंह का 'ट्रेन टु पाकिस्तान', अब्दुल हुसैन का 'उदास नस्लें', बदीउज्जुमा का 'छाको की वापसी', कुर्रतुल ऐन हैदर का 'आग का दरिया' तथा कमलेश्वर का 'लौटे हुए मुसाफिर' व 'कितने पाकिस्तान' कृष्णा सोबती का 'जिंदगीनामा' विभाजन पर लिखित मुख्य है। इस विषय पर जो लिखा गया है वह एक चिंता व चिंतन के रूप में है। वह समाज की चिंता है, व्यक्ति की चिंता है। जिसमे एक बेचैनी है, छटपटाहट है, उदासीनता है, दर्द है, त्रासदी है, अमानवीयता है, मनुष्यता पर संकट है, नफरत का दस्तावेज है।

लौटे हुए मुसाफिर

विभाजन की समस्या हर संवेदनशील व्यक्ति को पीड़ित करने वाली त्रासदी है। लेकिन हर किसी की अपनी पीड़ा व दर्द अलग-अलग है। उसको देखने का उसे समझने का अपनी दृष्टि है। कमलेश्वर जी की भी अपनी एक दृष्टि है। और यह दृष्टि उनके अंदर से आई है विभाजन के पीड़ा से। इस पर उनका स्वयं का अभिमत है कि "यह मेरा दूसरा उपन्यास है। ठीक उस समय का जब देश का विभाजन तय हो गया था और जगह-जगह सांप्रदायिक मारकाट शुरू हो गई थी। पूरी कौम को किस तरह गुमराह किया गया, यह यथार्थ परिदृश्य मेरे सामने था। जो कुछ मेरे छोटे-से शहर में, जिस तरह पूरा माहौल बदला और संवेदनशून्यता हावी होती चली गई, वे स्थितियाँ मुझे रचनात्मक स्तर पर कुरेदती रही...खासतौर पर सत्तार और सायकिल वाले रतन के रिश्तों का बदलाव मुझे बेचैन करता रहा...बावजूद इसके कि मेरे कस्बे में कोई दंगा-फ़साद नहीं हुआ था पर जो दंगा-फ़साद आंतरिक सतह पर हुआ था, वही इस उपन्यास का कथ्य बना।"17 उपन्यास में स्पष्ट है की ऊपरी सतह पर कुछ नही दरकता है किन्तु आंतरिक सतह पर सब कुछ टूट जाता है। यह

चुपचाप सब कुछ अचानक से बदल जाना पूरी व्यवस्था के बदल जाने की दास्तान है। पूरे मनुष्यता के बदल जाने की दास्तान है।

उपन्यास की शुरुआत इस बात से होती है कि, "सिर्फ नफरत की आग ने इस बस्ती को जलाया था।"18 लेखक ने यह भी दिखाया है की जब यह नफरत की आँधी नही चली थी तो यही बस्ती कैसी थी, कैसे सब एक दूसरे के तीज त्यौहार में जाते थे और मानते थे और सहयोग करते थे। लेकिन जब से यह हवा चली है। तब से सब कुछ विषाक्त हो गया है। बस्ती का कैसा सौहार्द था। कुछ इस तरह बया किया गया है, "जब हिन्दूओं की बस्ती से तजियें गुजरते थे, तो उन पर लोग गुलाब जल छिड़कते थे और हिन्दू औरते अपने बच्चों को गोदी में उठाएं तजियें के नीचे से गुजरती थीं...जब राम लीला का विमान उठता था, तो मुसलमान औरते दरवाजों की चिकें या बोरों के पर्दे उलटकर मूर्तियों के शृंगार की तारीफ करती थीं।"19 यह आजादी के पहले की गाँव का सामाजिक सदभाव की स्थिति है। जो नफरत की आग में जल कर राख हो जाती है। "लेकिन भीतर-भीतर एक भूचाल आया था। बड़ा भयानक भूचाल, जिससे बस्ती की चूल हिल गई थी, भीतर-भीतर सब कुछ बिगड़ गया था। दिली इमारते ढ़ह गई थी। अपनेपन का जज्बा मर गया था।"20 इसमे आजादी के पहले आजादी के समय व आजादी के बाद के समय को प्रस्तुत किया गया है कि कैसे सब कुछ कहाँ से कहाँ जा पहुँचा। "पाकिस्तान क्या बना, सब बिखर गया। आदमी के हौसले बिखर गयें, मन की मुरादे टूट गई, दिलों के रिश्ते खत्म हो गये।"21

इसमें विस्थापन भी है पर इसका विस्थापन कुछ अलग तरह का विस्थापन है। यह अपने जगह से कटकर अपने ही देश में विस्थापित होने का विस्थापन है। जो बस्ती तो छोड़े थे जाने के मुड़ से, पर गरीबी आड़े आ गई सरहद पार नहीं कर पाए और अपने ही शहर में इधर-उधर बिखर कर रह गये। "इस बस्ती के चिकवे भी पाकिस्तान जाने के हौसले से भागे थे। पर गरीबी आड़े आ गई

थी, इसलिए सूबा भी पार नही कर पाए। जिले में इधर उधर बिखर गये। लेकिन यहाँ कोई लौटकर नही आया।"22

आजादी के समय की स्थिति यह है कि सब मिलकर अंग्रेजों से लड़ रहे है। सत्तर कहता है कि, "यह तो मैं नहीं जनता, लेकिन इतना मुझे पता है कि अंग्रेज हमारे दुश्मन हैं- हिंदुस्तान के दुश्मन हैं- और इन्हे मार भगाना हमारा फर्ज है। पूरा मुल्क आज मुखालिफत में उठ खड़ा हुआ है।"23 पूरा उपन्यास उस समय की हलचलों से भरा पड़ा है। एक-एक दृश्य सामने आ जाता है। कैसे लोगों के बीच एक माहौल तैयार हो गया था की सबको डर लग रहा था की हिन्दू-मुसलमान का नही है मुसलमान हिन्दू का नही है। उपन्यास से कुछ कथन को हम देखते है जिससे बात और साफ हो जाती है कि लोगों के मन में क्या चल रहा है। अलीगढ़ के सियासी कारकुन जो विभाजन के कारण को समझते हुए कह रहा है, "तो बात जंग की नहीं है। इस वक्त हमें उन भितरी बातों को समझना है जो जिन्ना साहब कर रहे हैं। आप हिंदुओं की चालों को नहीं समझते। हिन्दू कौम कभी हमारे साथ नहीं हो सकती। हमने हिंदुस्तान पर सदियों हुकूमत की है। आजादी के बाद उसी का बदला वे मुसलमान कौम से लेगें, यह बिल्कुल तय है...।"24 इफ्तिकार हालातों को समझते हुए कहता है कि "लेकिन सुना हैं कि कांग्रेस हिन्दू-मुसलमान दोनों को साथ लेकर चलना चाहती है। वह यह फर्क नही करती।"25 साई बोलत है कि "कांग्रेस तो हिंदुओं की जमात हैं।"26 यासीन लीग, जिन्ना व पाकिस्तान का जबरदस्त पैरोकार है। वह कहता है कि "भई, बात यह है कि यह गलतफहमी बहुतों को है। कांग्रेस अगर हमारी जमात भी होती, तो हमें लीग बनाने की जरूरत क्यों पड़ती। अगर हिंदुओं के मंदिर में इबादत की जा सकती तो मस्जिदों की तामीर क्यों होती ? हिन्दू-हिन्दू है और मुसलमान-मुसलमान...।"27 इफ्तिकार की चिंता कुछ और है वह भारत पाकिस्तान के विभाजन को समझ रहा है कि नही समझ रहा है पर अपनी हकीकत को वह समझ रहा है। इस पूरे विवाद को वह अपने ढंग से जरूर समझ रहा है वह कहता है कि "असली लड़ाई

तो गरीबी और अमीरी की है। मुल्क के तकसीम होने से हमें क्या मिल जाएगा।"28... "अगर पाकिस्तान बना भी तो अपने किसी काम नही आयेगा। पाकिस्तान में भी हमें इक्का ही हांकना पड़ेगा।"29

लेखक ने मुसलमानों के साथ हिंदुओं की गतिविधियों पर नजर डालता है तो वहाँ भी इसी तरह का माहौल दिखायी पड़ता है। वहाँ भी इसी तरह के षडयंत्रों से वातावरण बजबाज रहा है। गठनायक जो संघ से जुड़ा हुआ है रतन को समझा रहा है कि, "औरंगजेब ने जो अत्याचार किये हैं, हिन्दू धर्म को जिस तरह भ्रष्ट किया, उसी का बदला तो लेना है। हमारी परंपरा है, राणा प्रताप की, शिवाजी की, जिन्होंने म्लेच्छों से कभी समझौता नहीं किया...।"30 दोनो पक्षों में नफरत इस कदर बढ़ती जा रही है की एक दूसरे को मरने काटने की तैयारियों में लगे हुए है। सत्तार कहता है कि, "सुन है उधर सूबे में के दूसरे शहरों में मुसलमानों को मारने के लिए हिन्दू बड़ी तैयारियां कर रहे हैं। वहाँ काली टोपी वाले बंदुके चलाना सिख रहे हैं।...वह यासीन भी तो मुसलमानों में तैयारी करवा रहा है।"31 इस उपन्यास में हिन्दू-मुसलमान के इस विवाद में सामान्य लोगों की कोई रुचि नही है। उन्हे तो अपने रोजी और रोटी की चिंता हैं। यह विवाद संघ और लीग का विवाद के रूप में अधिक उभर कर इसमें आया है। "गरीबी, अपमान, भूख, और बेबसी में भी वे हारें नही थे, पर नफरत की आग और शंकापूर्ण भी का धुआँ वे बर्दाश्त नहीं कर पाये और उनके काफिले एक अनजान देश की ओर चले गये।"32 और इसका हश्र यह होता है कि न तो वे नए मुल्क पाकिस्तान पहुँच पते है न अपने गाँव शहर में रह पाते है बल्कि दर-दर ठोकरे खाते हुए अपने ही मुल्क में बिखर जाते है। अनजान हो उठते है। विस्थापित सा जीवन जीते है। नसीबन कहता है कि, "लाहौर-वाहौर कहीं नही, वे फिरोजाबाद में वक्त काट रहे है, वही है बाल बच्चों समेत।...ढोलकवाले मजीद.. वो पाकिस्तान तो जा नही पाये...वो अब आगरा में जूते गाँठते है...और वो जो अपने हकीम जी थे...वो इंसान की नब्ज देखना छोड़कर अब घड़ियों की नब्ज देखते है और घड़ीसाज हो गये

है...ढोलक बनाने बाजनेवाला अनवर जसवंत नगर में है... वह अब घोड़ों को नाल लगता है...मौलवी साहब...आगरा राजामंडी मस्जिद के पुश्ते पर कवाब बेचते हैं...।"33 लौटे हुए मुसाफिर का अंतिम दृश्य यह है कि यह जो बिखरी हुई पीढ़ी थी इसकी दूसरी पीढ़ी खोजते-खोजते यहाँ तक आ गई है। वह भी मजूर बनकर काम करने आए थे तो रहने के लिए जगह खोजते-खोजते यहाँ तक पहुँच गये थे। जहाँ उनकी भेट नसीबन से होती है। और वह उन्हे पहचान लेती है। उन्हे उनके पूर्वजों के जगह को बताती।

इस तरह से यह उपन्यास विभाजन के पूर्व के परिदृश्य से लेकर विभाजन के दौरान व विभाजन के बाद की जो स्थितियाँ उस छोटी सी बस्ती में घटित होती है। वहाँ के सामाजिक संबंध कैसे संघ व लीग के विचारों से टूटते है। कैसे भाईचारा दुश्मनी में बदल जाता है। कैसे अविश्वास, डर भय लोगों में पैदा होता है। लोग कैसे अपने जड़ों से कट जाते है। अपने ही देश में विस्थापित हो जाते है। और इन परिस्थितियों में ही वे कैसे अपने रोटी-रोजी के लिए भटकते है। अपने गरीबी जहालत से कैसे लड़ते है। यह सब हम देख सकते है। और यह भी देख सकते है कि किसी भी कौम का व्यक्ति हो हर कोई नफरती ही नहीं है। वह चाहे इधर का हो जाने उधर का हो। अच्छे व बुरे दोनों तरफ है। यह भी दिखाया गया है। आजादी के बाद साथ-साथ व उसके बाद एक ऐसा सामाजिक वर्ग देश में बना जो सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व राष्ट्रीय सभी रूपों में स्वयं को अपनी जड़ों से उखाड़ हुआ पाता है। इसके चेहरे पर हताश निराश दुख दर्द भूख प्यास संघर्ष सबकुछ बेतहासा है। यह वर्ग विस्थापित वर्ग कहलाता है। और यही विस्थापित वर्ग दंगा फ़साद हत्या लूट आगजनी आदि को भोगता है। यही वह वर्ग है जिसकी सामाजिक समरसता सामाजिकता बंधुत्व भाईचारा सब कुछ कटुता में तब्दील हो जाता है। यह वही हिन्दुस्तानी आदमी है। जो अखंड भारत का नागरिक था। स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाइयाँ लड़ा था। और आज अपने देश में विस्थापित का यह अपनी जड़ों से कटा हुआ

कितने पाकिस्तान

कितने पाकिस्तान देव सभ्यता से लेकर मानव सभ्यता में व्याप्त बर्बरता को लेकर लिखा गया उपन्यास है। जो देव सभ्यता से होते हुए मानव सभ्यता के भीतर प्रवेश करता है। और उसमें व्याप्त बर्बरता को परतदर परत खोलते हुए चलते है। खूनी, हत्यारी, बलात्कारी, बर्बर, अमानवीय दस्तानों से उपन्यास अटा पड़ा है। इतिहास के चीत्कारों से उपन्यास गूँजता रहता है। एक तरह से दो चित्र इस उपन्यास में एक साथ चलते है। पहला चित्र नफरत का है तो दूसरा चित्र प्रेम का है। और लेखक नफरत को प्रेम के द्वारा काटता चलता है। यानि नफरत का जवाब नफरत नहीं हो सकता बल्कि नफरत को हमें प्रेम से जितना होगा। यानि यहाँ आप इसे गांधी प्रभाव कह सकते है। इस उपन्यास को पढ़ते हुए जायसी की पद्मावत याद आती है। नफरत के ऊपर प्रेम की विजय दिखाई गई है। और उसका सार यह है कि मानुष प्रेम भयहू बैकुंठि, नहीं त क्षार एक मुट्ठी। इतिहास की बरबार्ताओं को दिखाते हुए उसे मिटते हुए प्रेम की स्थापना की अपील यह उपन्यास करता है।

शिल्प की दृष्टि से लेखक ने एकदम नया प्रयोग किया है। जिस तरह की अदालत की व्यवस्था इस उपन्यास में की गई है, वैसी अभी तक हिन्दी के किसी उपन्यास में नहीं की गई है। और इस उपन्यास की सारी घटनाएं उस अदालत से ही आगे बढ़ती है। जितनी घटनाएं है और उससे जुड़े व्यक्ति है सबको अदालत में हाजिर किया जाता है। उससे सवाल जवाब किया जाता है।

कितने पाकिस्तान के लेखक कमलेश्वर विभाजन को केवल एक घटना मात्र नहीं मानते है। बल्कि इसे मानव सभ्यता के इतिहास में एक अमानवीय बर्बरता माना है। और इस पूरे वृतांत के द्वारा वे इतिहास में डुबकी लगा आते है। और वहां से अनेकानेक तथ्य सामने लाते है। और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता व उसका प्रभाव किस रूप में हैं इसकी चर्चा करते है। और वर्तमान समय का

जो निजाम हैं उस निजाम की खामियां व खामोशियां कहां है। इस पर भी उंगली रखते चलता है। उसमें दर्द कहाँ है, उसे रेखांकित करते है। और अपने सामयिक घटनाओं के प्रति लेखक सतर्क है। और इस क्रम में वह प्रधानमंत्री व रक्षा मंत्री को पत्र लिखता और शहीद जवानों की चिंता करते है। लेखक इस पूरे घटना को अकस्मात घटित घटना या योजना नहीं मानता। बल्कि उसने तथ्यों के द्वारा यह स्पष्ट किया है कि इसकी पृष्ठभूमि काफी समय पहले से तय की जा रही थी।

उपन्यास का फलक राष्ट्रीय घटनाओं तक नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय घटनाओं तक व्याप्त है। इनकी चिंता मनुष्य की चिंता है। किसी राष्ट्र की सीमा में बंधे हुए मनुष्य और राष्ट्र की नहीं बल्कि राष्ट्र की सीमाओं के बाहर जो मनुष्य है, जो विश्व है उसकी चिंता लेखक इस उपन्यास में करता है। विभाजन के दौरान धार्मिक नारे, धार्मिक भावनाएं भड़काने वाले, धर्म विरोधी गतिविधियां धर्म के बीच कट्टरता पैदा करने वाले संगठन खूब कार्य कर रहे थे। विभाजन का पहला दृश्य विभाजन के उपरांत उपजे हस्तांतरण की समस्या के साथ स्त्री अस्मिता को बचाने का सवाल है। विभाजन से क्या स्थिति उत्पन्न हुई है। समाज कहां से कहां जा पहुंचा था। आपसी भाईचारा कैसे दुश्मनी में बदल गया था। कैसे एक दूसरे के दुश्मन बन गए थे। कैसे एक दूसरे को शक व हिकारत की नजरों से देखने लगे थे। कैसे एक दूसरे के प्राण लेने पर तूले हुए थे। कैसे एक दूसरे से पराए बनाने लगे थे। यह सब विभाजन से समय हुआ।

जीना कितना मुश्किल होता जा रहा है। लोग घरों में कैद हो रहे या घर छोड़कर कहीं और बसने जा रहे हैं। यह उजड़ने-बसने के बीच का जो दर्द है वह नितांत वैयक्तिक दर्द है। हर उजड़ने वाले, बसने वाले के लिए अलग-अलग स्तरों पर अलग-अलग दर्द है। लोग सिर्फ अपने दर्द को लेकर जा रहे हैं। अपने जन्म और उस जन्मभूमि से जुड़े यादें उस मिट्टी में पले बढ़े सपने नहीं ले जा रहे हैं। अपने मिट्टी, अपने मुल्क को छोड़ना किसी के लिए आसान नहीं होता है। कितने पाकिस्तान उपन्यास देव सभ्यता वह मनुष्य सभ्यता के मध्य भी संघर्ष की स्थिति बनी हुई है। देव व मनुष्य

सभ्यता व टकराहटो के माध्यम से लेखक पूंजीवाद वर्ग या सामंतवाद, तानाशाही व सामान्य जन के टकराव का भी अंकन किया है। जिस प्रकार देव समाज को अपनी अस्मिता, अपनी सत्ता को बचाने व बनाए रखने के लिए मनुष्य सभ्यता के विरुद्ध तरह-तरह के षड्यंत्र रचा और उन्हें अपने मनमाफिक निर्मित करते रहे, ठीक उसी प्रकार से पूंजीवादी शासन अपने स्वार्थों के लिए सामान्य जनता का सदैव दोहन किया। और जब सामान्य जन उसके विरुद्ध आवाज उठाई तो वह एक जुट होकर उसका दमन शोषण और उसके साथ षड्यंत्र किया। उसे कुचलने की पूरी कोशिश की। लेखक इस बात को देव सभ्यता व मानव सभ्यता के विकास के माध्यम से बताना चाहा है। इस तरह यह उपन्यास अपने ढंग से अकेला उपन्यास है।

विश्व में जितने भी महायुद्ध या विभाजन हुए हैं। सब में पूँजीपतियों या सत्ता के लोलुपों का कहीं ना कहीं कुछ स्वार्थ या उनके मूर्खतापूर्ण निर्णय के परिणाम थे। ऐसे लोग मनुष्यता के रक्षक, उसके पोषक नहीं थे। यह जनविरोधी नीतियों के समर्थक, पालनकर्ता और निजी स्वार्थों व हितों के रक्षक लोग थे। जिन्हें आम जनता के दुख-दर्द का पता न हो। वे विभाजन क्या विश्व युद्ध भी अपने स्वार्थ के लिए लड़ते हैं। खून की नदियां भी बहाते है। इतिहास के पन्नों में दर्ज रक्त रंजित घटनाएं इन्हीं जनविरोधी, लोक विरोधी नीतियों का परिणाम है। जो सामंतवादी, तानाशाही व शासन के लोभी नेताओं के परिणाम स्वरूप हुआ है। विश्व शांति के लिए स्थापित संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव कोफी अन्नान को भी लेखक ने अपनी अदालत में हाजिर होने के लिए अपने अर्दली को भेजता है। लेकिन कोफी अन्नान साहब छाती के दर्द का बहाना बनाकर पीछा छुड़ाना चाहते हैं। इस पर अदालत दलील करती है कि अस्पताल में जाकर कोफी अन्नान से कहो कि दुनिया की छाती में तेज दर्द बार-बार उठता है। और उसे सांस लेने में तकलीफ लगातार हो रही है। उस दर्द को लोग कैसे सह रहे है। उनके दर्द को कौन हरने वाला है। यह सवाल अदालत कोफी अन्नान से करती है।

दुनिया में जो विभाजन या युद्ध हुए है। वह किसी न किसी उन्माद के चलते ही हुए हैं। और जितनी बार यह युद्ध या विभाजन हुआ है उसका शिकार अधिकांश जन सामान्य ही हुआ है। और वह पीढ़ी दर पीढ़ी इसके दर्द से, इसके मार से मुक्त नहीं हो पाता है। भारत पाक का विभाजन हो या नागासाकी हिरोशिमा परमाणु बम का गिराना। दोनों का दर्द तभी तक लोग भुगत रहे हैं। यह अमनपसंद आपस में भाईचारे के साथ रहने वाले सामान्य जनता के फैसले नहीं होते बल्कि चंद लोगों का उनके निजी स्वार्थ का फैसला है। जिसे आम जनता अपने कंधों पर लादे दुख की तरह ढो रही होती है। मुट्ठी भर लोगों के उन्माद, उनके सनकीपन का शिकार पूरी दुनिया हो जाती है। इससे बचाने की अपील लेखक इस उपन्यास में करता है।

विभाजन से उपजी सामाजिक एवं सांस्कृतिक विसंगतियां

विभाजन से पूर्व व विभाजन के समय हिन्दू-मुस्लिम विरोध की जो आंधी चली वह आज भी बंद नहीं हुई है। इस विषय पर एक बात स्पष्ट होना जरूर होता है कि अब यह एक राजनीतिक मुद्दा बन गया है हमारे यहा। राजनीतिक पार्टीया इसका राजनीतिक लाभ लेती है। और यही राजनीतिक लोग इसको बनाए रखना चाहते है। इसलिए इस विषय पर आए दिन कुछ न कुछ टीका-टिप्पणी देते रहते है। सामान्य लोगों के मध्य इस तरह का कोई विरोध नहीं होता लेकिन राजनीतिक पार्टीया उसे भी करवाती है। यह देश के लिए दुर्भाग्य पूर्ण है। कुलमिलाकर यह एक राजनीतिक मुद्दा है जिसे सामाजिक मुद्दा बनाया जाता है। और उसे उसी रूप में प्रचारित किया जाता है। और इसे वोट बैक का स्थायी विषय बनाकर रख दिया गया है।

भारतीय समाज में विभाजन हो या बिखराव वह व्यक्ति को जितना अन्य तरह से प्रभावित करता है या उसे तंग करता है उसी तरह वह उसे सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से भी तंग व प्रभावित करता है। सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से वह व्यक्ति व समाज को अधिक तोड़ता व कमजोर

करता है। समाज की सामाजिकता उसके संगठित रहने में समाहित है विघटन या विखराव में नहीं। विभाजन व्यक्ति को कमजोर करता है। उसके जीवन में क्लेश को बढ़ता है। विभाजन सामाजिक रूप से समाज को सीमित करता है और सांस्कृतिक रूप से उसे संकीर्ण बनाता है। भारत-पाकिस्तान का विभाजन न सिर्फ भारत-पाकिस्तान का विभाजन था बल्कि यह मनुष्यता का भी विभाजन करने वाला विभाजन सिद्ध हुआ। लोग सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से भी बट गए। जो समाज एक सामासिक समाज व जो संस्कृति एक सामासिक संस्कृति थी वह धर्म के नाम पर टूट जाता है। यह मनुष्यता का टूटना था जिसमें उसके दो अंग समाज व संस्कृति टूट कर विखर जाते है।

यदि कमलेश्वर के उपन्यासों के हवाले से बात की जाए तो एक सड़क सत्तावन गालियां उपन्यास में मजहब की एक बड़ी पतली लकीर कमलेश्वर खिचतें है। वह भी हबीब साहब के माध्यम से। माहौल कुछ इस कदर बनाया गया है कि जैसे मुसलमान होना अपने आप में एक गुनाह हो। एक बहुत बड़ा अपराध हो। बेगुनाह लोग भी दहशत के साये में जीने को मजबूर है। जो गुनहगार है वह किसी भी जाति, धर्म, संप्रदाय का हो वह गुनहगार है। वह सजा का हकदार है। लेकिन किसी व्यक्ति विशेष की वजह से किसी जाति, धर्म, संप्रदाय को अपराधी घोषित करना अपने आप में अपराध है इस लोकतंत्र में। हबीब साहब जो प्रगतिशील विचारों वाले व्यक्ति है। पर उनकी प्रगतिशीलता भी संदेहास्पद व खतरे में है। “यह है हबीब साहब-शहर के बुजुर्ग प्रगतिवादी ! पर यहाँ क्या चलता-प्रगतिवादी और वह भी मुसलमान ! करेला और नीम चढ़ा ! अछूत से भी बदतर हालत कर दी फिरकापरस्त और मजहबपरस्तों ने।”34 यह प्रश्न पूरे समाज से है। कि आखिर यह क्यों किया जा रहा है। एक ही तरह के लोग या एक ही धर्म व संप्रदाय के लोग जहां होंगे वहाँ किसी तरह का कोई क्लेश नहीं होगा। अगर यह सोच है तो यह बहुत अदूरदर्शी सोच है। क्योंकि अगर ऐसा होता हो पाकिस्तान के मुसलमान आपस में नहीं लड़ रहे होते, और अफगानिस्तान

तालिबान नहीं बना होता। किसी को यदि धर्म, संप्रदाय विशेष का होने से विरोध होने लगेगा तो समाज में कई तरह के विरोध के मार्ग खुल जाएगे।

गंगा-जामुनी तहजीब जो इस देश के एका की, एकता की रीढ़ थी, उसकी मजबूती में भी यह विध्वंशक, आततायी विभाजन ने दरारे डाल दी। लोगों के बात करने का तरीका बदल गया। सोचने का ढंग बदल गया। व्यवहार बदल गया। मेल-मिलाप के अवसर कम हो गए। नजदीकियाँ दूरियों में बदल गई। लोग एक दूसरे पर अविश्वास करने लगे। लोग धार्मिक से अधिक कट्टर हो गए। एक दूसरे के प्रति नफरत करने के कारण खोजे जाने लगे। लोग इंसान कम हिन्दू और मुसलमान ज्यादा बनाने लगे। यह सारी बातें धर्म की बातें नहीं है, यह बातें शासन सत्ता के सम्मोहन के चलते उपजी राजनीतिक लोलुपता, स्वार्थता के कारण हुई। जिसके पीछे उस समय के शीर्ष नेताओं की अदूरदर्शिता भी छिपी हुई है। दूसरी बातें यह हुई की जिस जगह पर किसी एक वर्ग की जनसंख्या अधिक है और दूसरा वर्ग कम है वह से कम आबादी वाले की सुरक्षा का प्रश्न, समानता का स्वर उठा, भेदभाव प्रकट रूप में होता हुआ दिखा, इस तरह एक दूसरे में नजादीकियाँ कम हुई और नफरत व भय का रूप प्रगाढ़ होता गया। आशंकाएं प्रबल होती गई और इस प्रबलता के कारण भी सामने मौजूद थे। जैसे की धार्मिक संगठनों का गठन, धार्मिक गतिविधियों को बढ़ावा। धार्मिक व संप्रदायवादी नारों की गूंज। यहाँ इस बात की प्रबल संभावना यह है कि जैसे ब्रिटिश हुकूमत जिन्ना को उसकाय था पाकिस्तान व मुसलमानों को लेकर। उसी तरह हिंदुओं को भी हिन्दूत्वा व हिंदुस्तान के नाम पर अपना मोहरा बनाया जो लगातार मुसलमानों को लक्ष्य करके अपनी बात रखते है। उनका विरोध करते है। संप्रदायवादी व भड़काऊ बयानबाजी करते है। यह समान रूप से दोनों पक्षों में है। इस तरह से दोनों तरफ से धार्मिक कट्टरता बढ़ती गई और एक मिली-जुली गंगा-जमुनी तहजीब, उसकी सहृदयता, उसकी जीवटता, उसकी अपनी मिठास, सब कुछ जैसे टूटता बिखरता रहा। और जो थोड़े से कंधों इसे बचाने की कोशिश किए और कर रहे है उन्हे द्रोही, नकली

हिन्दू या नकली मुसलमान करार दे दिया जाता है, नफरती समूहों के द्वारा। समृद्ध राष्ट्र के लिए, उसकी उन्नति के लिए, सामाजिक समरसता के लिए, एका के लिए हमे इस तरह के नफ़रतों से बचना होगा व देश की बचना होगा। सामाजिक समसरता को हमे मजबूत करना होगा। और उसके लिए हमे नफरत की खेती नहीं बल्कि प्रेम की जमीन तैयार करनी होगी।

सामाजिक सद्भाव हमारा क्या था। हम कैसे एक थे। इस पर कमलेश्वर अपने उपन्यास एक सड़क सत्तावन गालियां में लिखते है कि, "जब हिंदुओं की बस्ती से ताजियें गुजरते थे, तो उन पर लोग गुलाब-जल छिड़कते थे और हिन्दू औरते अपने बच्चों को गोदी में उठाए ताजियों के नीचे से गुजरती थीं और दौड़-दौड़कर फेके हुए मखाने बीनकर श्रद्धा से आँचल के खूट में बाँध लेती थीं।...जब रामलीला का विमान उठता था, तो मुसलमान औरतें दरवाजों की चिकें या बोरों के पर्दे उलटकर मूर्तियों के शृंगार की तारीफ करती थीं और उनके बच्चे विमान के साथ दूर तक शोर मचाते हुए आया करते थे- "बोल रजा रामचन्द्र की, जै!...लेकिन सिर्फ नफरत की आग ने इस बस्ती को जलाया था।"35 नफरत की आग इस बस्ती को जलाया है। लेखक ने बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में नफरत को बस्ती को उजड़ने का कारण दर्ज किया है। और यह सच ही है कि नफरत की आग अपने की लोगों को जलाने के लिए उत्सुक हुआ करती है।

जैसे-जैसे जिम्मेदार लोगों की बातें आम लोगों तक पहुचने लगी वैसे-वैसे लोगों की धारणाए बदलने लगी। लोगों के विचार, भावनाएं, बात व्यवहार सब कुछ में छुपी हुई आशंकाएं, अविश्वास, भय पनप उठा। यह कैसे विचार था कि लोग अपना भला-बुरा भी नहीं समझ पाते है। अपना हिट अहित भी नहीं देख समझ पाते है। और एक यह में जलने लगते है। कमलेश्वर लिखते है कि "लेकिन भीतर-भीतर एक भूचाल आया था। बड़ा भयानक भूचाल, जिससे बस्ती की चूल हिल गई थी। भीतर-भीतर सब कुछ बिगड़ गया था। दिली इमारतें ढह गई थीं। अपनेपन का जज्बा मर

गया था। नफरत की आग ने इस बस्ती को निगल लिया था।...और यह भरी-पूरी चिकवों की बस्ती सबसे पहले उजड़ गई थी। पता नहीं, यह आग कहाँ छिपी हुई थी।"36

इस पूरे संसार का जितना अकेले नुकसान नफरत ने किया है। जितना अकेले लोगों को नफरत ने जलाया है उतना और कोई दूसरी वस्तु नहीं जलाया है। नफरत एक ऐसी आग है जो दोस्त को भी दुश्मन बना देती है। और इस आग के फैलने की रफ्तार बहुत तेज होती है। इतनी तेज की गाँव, शहर, कस्बा सब बहुत जल्दी इसमे जलने लगते है। "नफरत की इस आग की चिनगारियाँ बाहर से आई थीं।...दूसरे शहरों, कस्बों और सूबों से।"37

इस नफरत व विभाजन से लोगों को क्या मिला। यह हमे सोचना चाहिए कि इतना बड़ा उलट फेर, इतना बड़ा नरसंहार, और इतने बड़े पैमाने पर लोगों का उजड़ना व बसना और घर से बेघर होना। शरणार्थी बनाना। अस्मत का लूटा जाना, आगजनी, हत्या, बलात्कार, यह सब विभाजन से मिला तो क्या विभाजन इन अमानवीयताओं के लिए हुआ था। या बेहतरी के लिए हुआ था। इसकी समीक्षा होनी चाहिए। जिस उद्देश्य व विचार के साथ इसको खड़ा किया गया था,वह उद्देश्य व विचार ही गलत था। इसलिए इसके परिणाम भी गलत ही निकले। बेहतरी की जगह लोगों ने और बड़ी जहालत में उलझ गए। कमलेश्वर जि ने लिखा कि "आज भी सब कुछ लगभग वैसे ही है, जैसे आजादी से पहले था। सिर्फ इस बस्ती को उदासी ने जकड़ लिया है। ठहरी शामें होती हैं और रुका हुआ वक्त है।"38

क्या इसके लिए पाकिस्तान की मांग की गई थी। कए इसके लिए लोगों ने अपने ही लोगों को दुश्मन बनाया, क्या इसके लिए लोगों ने अपना घर-परिवार छोडा था। और क्या इसके लिए कि वे जहालत को भुगतते रहे इसके लिए यह सब किया गया था। और अगर इसके लिए ही यह सब किया गया था तो इसके पीछे बहुत बड़ी राजनीतिक धूर्तता थी। और जिन मुद्दों के साथ यह सब

हुआ था कम से कम उन बातों पर इसे खरा उतरना चाहिए लेकिन वह भी नहीं हुआ। यानि यह पूरी तरह से एक साजिश थी। जिसे लोग समझ नहीं पाए। नफरत की राजनीति में अक्सर यही होता है कि जब तक लोग समझते है तब तक चीजें बहुत बिगड़ चुकी होती है और हाथ से निकल चुकी होती है। जैसे कि भारत-पाक के विभाजन के परिणाम से स्पष्ट है। "पाकिस्तान क्या बना, सब बिखर गया। आदमी के हौसले बिखर गए, मन की मुरादें टूट गई, दिलों के रिश्ते खत्म हो गये...।"39

लोग बहुत अबोध होते है। एक कहावत कहीं जाती है कि मारता क्या न करता। भारतीय लोगों के पास इतने तरह के अभाव, जहालत, है कि कोई अगर जरा सा झूठा भी आश्वाशन देता है तो वे उसे बहुत जल्दी मान जाते है। क्योंकि इनके पास अभाव ही अभाव है। सत्तायें इसका फायदा उठती रही है और लोग शिकार होते रहे है। और जैसे उनके जीवन में कभी कुछ बदलता ही नहीं है। सब कुछ स्थायी हो गया है। सब कुछ टिक गया है। पाकिस्तान की मांग के साठ भी लोग यही सोच रहे थे कि जैसे सब कुछ वहाँ जाकर बदल जाएगा। पर भला ऐसा कभी हुआ है जो आज होगा। न हुआ है न होगा। पर लोग फस जाते है। गाँव के लोग कहते है "लगता है अब अपना पाकिस्तान बन जाएगा शायद एक बेहतर जिंदगी मिले मुसलमानों को...इतनी गरीबी, न करने को काम, न रहते की जगह।"40

जब व्यक्ति जरूरत से अधिक धार्मिक या कट्टर होता है तो वह पतन की ओर बढ़ता है। कट्टरता किसी भी चीज का हल नहीं है। और इस समाज में छोटा-छोटा होता वह चाहे हिन्दू हो या मुसलमान या कोई अन्य। इसी तरह बड़ा-बड़ा होता है वह हिन्दू हो या मुसलमान या कोई अन्य। और इसमें बड़े आपस में सब एक हुए रहते है और शिकार छोटे बन जाते है। जैसा कि लेखक ने लिखा है कि "इक्केवालें ज्यादातर मुसलमान थे और कुली हिन्दू, पर उनमें कहीं फरक नहीं था। सब पर जमाने की मार थी, सबके नासूर एक-से रिस रहे थे। और सबके मसले समान थे। उन्हे

धर्म चर्चाओं से मतलब नहीं था, पर इससे मतलब जरूर था कि धर्म उन जैसे बदनसीबों के लिए क्या कहता है ?"41

सामाजिक प्रभाव की दृष्टि से विभाजन सामाजिक संरचना में गहरी तोडफोड व उठा पटक मचाने वाला विध्वंसक विचारधारा सिद्ध हुआ है। सामाजिक संरचना जो धार्मिक पूजा पद्धति की दृष्टि से भले ही अलग थी किन्तु उसका सामाजिक जीवन सौहार्दपूर्ण था। उसमें एकता थी। एक दूसरे के सुख-दुख का साथी था। पड़ोस मे रहते हुए एक दूसरे के पड़ोसी हुआ करते थे, हिन्दू या मुसलमान बाद में होते थे किन्तु विभाजन ने उन्हे पड़ोसी से हिन्दू व मुसलमान बना दिया था। यह विभाजन का सामाजिक विवर्तन था कि उसमें सामाजिक संरचना में छेद किया। उसे घायल किया। उसे खून से लटपथ किया। सामाजिक समीकरण को बदल दिया। दिली संबंधों को कमजोर किया।

संस्कृति एक साझी विरासत है। और कई बार यह पूरी तरह वैयक्तिक और कई बार यह मिश्रित व मिलिजुली होती है। जैसे हम भारतीय संस्कृति कहते है। लेकिन भारतीय संस्कृति में ही हम कई बार बिहारी संस्कृति, मराठी संस्कृति, गुजराती संस्कृति या उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम की संस्कृति में हम भेद स्थापित करते है। जिसे हम भारत की एक बड़ी विशेषता अनेकता में एकता बताते है। लेकिन आज पुरा विश्व जब भूमंडलीकरण की दौड़ में शामिल हो, दुनिया के किसी भी हिस्से में कई-कई संस्कृतियों के लोग एक साथ मिल कर रहते हुए जब एक साझी संस्कृति को विकसित करते है तब संस्कृतियों में संक्रमण होना लाजमी है। विश्व भर की संस्कृतियों में बदलाव हो रहा है। और यह संभव हो रहा है भूमंडलीकरण व बाजारवाद के कारण। "संस्कृति कमलेश्वर के लिए न बहुत अनाम-अरूप चीज है, न सुपरिभाषित-सुव्याख्यायित परंपरा-पुंज का स्वीकार और न ही अविचारणीय या सुविधानुसार विचारणीय विषय। संस्कृति उनके लिए महत्त्वपूर्ण विचार-बिन्दु है, अत्यंत महत्त्वपूर्ण, वह अस्त्र, जिससे वे वर्तमान की चुनौतियों का सामना करना चाहते है।

संस्कृति-विचार में वे भारी-भरकम उक्तियों, शास्त्रीय-व्यवस्थाओं, कला-आस्वादन, इमारतों के स्थापत्य के चमत्कार और उनके परिगणन के बजाय आम जन के परंपरागृहीत विश्वासों, धारणाओं, व्यवहारों को प्रमुखता देते है। वे उनकी जांच-पड़ताल करते हैं और समयानुकूल न होने वाली बातों की धज्जियां बिखेर देते हैं तथा उन परंपराओं को रेखांकित-आलोकित करते है, जो वर्तमान की धुंध को छाँटने वाली दृष्टि से जनता को लैस कर सकें।"42 भारतीय संस्कृति में हो रहे लगातार परिवर्तन को कमलेश्वर रेखांकित करते चलते है। जब हमारा समाज बदलता है। समाज के मान-मूल्य बदलते है। तब इस बदलते हुए समाज व मान-मूल्यों के साथ हमारी सभ्यता व संस्कृति में भी परिवर्तन होता है। भारतीय संस्कृति में, समाज में जो परिवर्तन घटित हो रहा है। वह चाहे पारिवारिक संरचना का हो, पति-पत्नी के संबंधों का हो, संवेदनाओं का हो, मानवता का हो, भाईचारे का हो, एकता का हो, सहृदयता का हो, करुणा का हो, दया का हो, नैतिकता का हो, बात-विश्वास व भरोसे की हो सब तरह से सब में परिवर्तन कमलेश्वर ने अपने उपन्यास लौटे हुए मुसाफिर व कितने पाकिस्तान में दिखते है।

विभाजन का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

हर देश राष्ट्र व राज्य की अपनी एक अर्थ व्यवस्था होती है। जो राष्ट्र राज्य में निवासरत जनसंख्या के द्वारा निर्मित होती है। लेकिन यदि इस जनसंख्या को विभाजित कर दिया जाए तो यह पूरी अर्थ व्यवस्था को भी विभाजित करना हुआ। और मानव समाज एक सामाजिक समाज है। इस व्यवस्था में एक आदमी दूसरे को प्रभावित करते है। इसकी संरचना में एक आदमी दूसरे से व दूसरा आदमी तीसरे और तीसरा चौथे से जुड़ा है यानि पूरा समाज की एक दूसरे से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। इसी तरह अर्थ व्यवस्था किसी एक व्यक्ति के हाथ की चीज नहीं है। बल्कि यह राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर की व्यवस्था है। यही कारण है की यह राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय

गतिविधियों से प्रभावित होती है। इस अर्थ में अर्थ व्यवस्था स्वयं में कोई स्वतंत्र अर्थ व्यवस्था नहीं है। बल्कि यह सामाजिक व्यवस्था है। और यह समाज से पूर्णतः प्रभावित है। जहां एक मनुष्य की आर्थिक दशा की जड़ दूसरे मनुष्य से गुथी हुई है। एक की अर्थ व्यवस्था प्रभावित होती है तो इसका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रभाव दूसरे पर भी पड़ता है। अर्थ व्यवस्था में उतार-चढ़ाव इस बात को सिद्ध भी करता है। विभाजन के दौरान प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष जन-धन की जो हानि हुई सो हुई ही इसका प्रभाव लंबे समय तक क्या बल्कि आज भी विभाजन के समय विस्थापित होने वाले लोग आर्थिक रूप से भुगत रहे है। आज भी वे आर्थिक रूप से अपने आप की समृद्ध नहीं कर पाए। कमलेश्वर के उपन्यास लौटे हुए मुसाफिर में जो चिकवा की बस्ती पाकिस्तान जाने के लिए अपनी बस्ती से जा चुके थे। वे आर्थिक तंगी की वजह से ही पाकिस्तान नहीं जा पाते है और फिर अपने ही देश मे शरणार्थी बन कर रह जाते है। इसके पहले ये लोग अच्छे से कमाने खाने वाले थे पर उजड़ने के बाद ये लोग दिहाड़ी मजदूर बनकर रह जाते है। इसके साथ ही विभाजन के समय लाखों-लाख लोगों के बने-बनाए व्यवसाय खत्म हो गए। कितने लोग बेरोजगार हो जाते है। इस तरह विभाजन अर्थ व्यवस्था को गहरे रूप से प्रभावित करता है। और उसकी कमर को तोड़ने की पूरी कोशिश करता है।

इसके साथ ही विभाजन ने सामाजिक व सांस्कृतिक व्यवस्था की भी कमर तोड़ी। आखिर हिन्दू हो या मुसलमान मनुष्य पहले मनुष्य है। जब वह इंसान से पहले हिन्दू या मुसलमान हो जाता है तो वह सांप्रदायिक विचारधारा का शिकार हुआ व्यक्ति होता है। और विभाजन से जिस तरह से हमारी अर्थ व्यवस्था प्रभावित होती है ठीक उसी तरह से सामाजिक व सांस्कृतिक व्यवस्था भी प्रभावित होती है। इससे कारण एक एक ही समाज में एक ही साथ रहते हुए इतने दूर होते चले जाते है या बने रहते है कि ऐसे लगता है जैसे दोनों दो अलग-अलग ध्रुवान्त है। और इस दूरी के कारण हम एक दूसरे का सम्मान नहीं कर पते है। और कई बार तो कई उत्सवों पर यह वैमनष्य

प्रकट भी होता रहा है। तो विभाजन व विभाजित विचार हमारी अर्थ व्यवस्था, हमारी समाज व्यवस्था, हमारी संस्कृति सबको प्रभावित कियाा है। इस प्रभाव को हम नकार नहीं सकते है।

विभाजन की राजनीति व विभाजन की समस्या

विभाजन की समस्या एक अत्यंत संवेदनशील मुद्दा है। और सीधे-सीधे जनता से जुड़ा हुआ मुद्दा है। इससे लोग प्रत्यक्ष प्रभावित होते है। इसलिए लोग इसके साथ त्वरित गति से जुड़ जाते है। विभाजन का इतिहास भी है विभाजन का भूगोल भी है। विभाजन की राजनीति भी है और विभाजन की समस्याएं भी है। ब्रिटिश जब भारत का विभाजन कर रहे थे, उसी के साथ दुनिया के अन्य हिस्सों में भी उसने विभाजन किए। यह उनकी राजनीति व कुटिनीति का हिस्सा था। लेकिन विभाजन किसी भी समस्या का हाल नहीं है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। भारत-पाक का विभाजन। विभाजन के उपरांत भी आज भारत की पाकिस्तान के साथ बन रही अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं पर आज भी समस्याएं खत्म नहीं हुई है। बल्कि यह विवाद लगातार और अधिक गहराता जा रहा है। और इन सबको लेकर देश के भीतर राजनीति भी चलती ही रहती है। इस तरह से यदि देखे तो विभाजन की राजनीति भी है और विभाजन की समस्या भी है। विश्व में कितनी संस्थाए नियम-कानून, सुलह समझौते हुए लेकिन इसका कोई स्थायी हाल नहीं निकल सका। और इस समस्या से आज पुरा विश्व परेशान है। विभाजन की समस्या अंतर्राष्ट्रीय समस्या है। लोगों की जान व आर्थिक बर्बादी का सबसे बड़ा केंद्र भी यह विभाजन है। और इसके दंश से लोह आज भी मुक्त नहीं हुए है। आज भी लोग इसे भुगत रहे है। इसके दुष्परिणामों को भुगतने के लिए अभिशप्त है। राजनेताओं की अपनी मैत्री है। व्यापार व कारोबार हो रहे है। लेकिन इसकी समस्या का हाल नहीं हो रहा है। यह सब बहुत कुछ कहता हुआ भी मौन है।

विभाजन के संदर्भ में कमलेश्वर की प्रासंगिकता तब तक रहेगी जब तक इस दुनियाँ में नफरत व नफरत का कारोबार रहेगा। जब तक इस दुनियाँ में जाति, धर्म, मजहब, संप्रदाय के नाम पर लोगों का कत्ल होता रहेगा, जब तक धार्मिक सांप्रदायिक राजनीति होती रहेगी, जब तक धार्मिक सांप्रदायिक हत्याएं होती रहेगी, जब तक युद्ध व विश्व युद्ध होते रहेगे, जब तक वर्चस्व की लड़ाइयाँ चलती रहेगी, जब तक मनुष्य अमानवीय बर्बर होता रहेगा, जब तक विश्व में यूक्रेन-रशिया, तालिबान, रहेगा, जब तक किसी भी तरह के भेदभाव आधारित जोर-जुल्म, अत्याचार, दमन-शोषण,, हत्या,बलात्कार, लूट, आगजनी, बमबारी,परमाणु बम, अणुबम, और जब तक आततायी शक्तियों द्वारा स्त्रियों की अस्मत लूटी जाती रहेगी तब तक कमलेश्वर व कमलेश्वर जैसे लेखक व उनका लिखा हुआ साहित्य प्रासंगिक रहेगा। कितने पाकिस्तान विश्व में भाईचारे, एकता, समन्वय, सामंजस्य, प्रीति आदि को स्थापित करने की अपील करती हुई किताब है। विश्व से नफरत, द्वेष, ईर्ष्या, हत्या, लूट, बलात्कार, हिन्दू-मुस्लिम आदि का विरोध करती है। और वह मनुष्यता की बात करती है और जब विश्वस्तर पर जब लगातार मनुष्यता का ग्राफ गिर रहा हो तो ऐसे में इसकी अपील करने वाली किताब व लेखक निसन्देह प्रासंगिक व महत्वपूर्ण हो जाता है। और एक लेखक की एक उपलब्धि यह भी होती है कि वह किस प्रकार के कालखंड में प्रासंगिक व उपयोगी है। जब विश्व में एक तरह का नरसंहार मचा हुआ तो ऐसे में जब कोई लेखक उसके खिलाफ खड़ा हुआ नजर आता है तो वह लोगों को संबल देता हुआ नजर आता है। और वह जितनी दूर तक और जब तक लोगों को संबल देता रहेगा तब तक प्रासंगिक रहेगा। कालजयी रचनाएं शाश्वत सत्य व मूल्यों पर लिखी गई होती है, इसलिए वे काल का अतिक्रमण कर कालजयी बन जाती है। कमलेश्वर इस अर्थ में कालजयी साहित्यकार है। और प्रासंगिक भी है।

संदर्भ ग्रंथ

1 संपादक विभूति नारायण राय कथा-साहित्य के सौ बरस शिल्पायन प्रकाशन संस्करण 2008 पृ.133

2 संपादक विभूति नारायण राय कथा-साहित्य के सौ बरस शिल्पायन प्रकाशन संस्करण 2008 पृ.133

3 शिव कुमार मिश्र सांप्रदायिकता व हिन्दी उपन्यास वाणी प्रकाशन संस्करण 2015 पृ.76

4 राजेगोरे राम विश्वंभर कमलेश्वर कृति कितने पाकिस्तान एक अध्ययन ए. बी. एस. पब्लिकेशन वाराणसी प्रकाशन संस्करण 2015 पृ.96

5 राजेगोरे राम विश्वंभर कमलेश्वर कृति कितने पाकिस्तान एक अध्ययन ए. बी. एस. पब्लिकेशन वाराणसी प्रकाशन संस्करण 2015 पृ.96

6 राजेगोरे राम विश्वंभर कमलेश्वर कृति कितने पाकिस्तान एक अध्ययन ए. बी. एस. पब्लिकेशन वाराणसी प्रकाशन संस्करण 2015 पृ.97

7 राजेगोरे राम विश्वंभर कमलेश्वर कृति कितने पाकिस्तान एक अध्ययन ए. बी. एस. पब्लिकेशन वाराणसी प्रकाशन संस्करण 2015 पृ.97

8 वीरेंद्र यादव उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता राजकमल प्रकाशन संस्करण 2017 पृ.52

9 माधुरी शाह कमलेश्वर का कथा साहित्य साहित्य यत्नाकर प्रकाशन संस्करण 1982 पृ.5

10 शिव कुमार मिश्र सांप्रदायिकता व हिन्दी उपन्यास वाणी प्रकाशन संस्करण 2015 पृ.76

11 यशपाल झूठ-सच प्रथम खंड लोकभारती प्रकाशन संस्करण 2010 पृ.120

12 वीरेंद्र यादव उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता राजकमल प्रकाशन संस्करण 2017 पृ.71

13 भीष्म साहनी तमस राजकमल प्रकाशन संस्करण 2019 पृ.223

14 राही मासूम रजा आधा गाँव राजकमल प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.254

15 राही मासूम रजा आधा गाँव राजकमल प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.318

16 वीरेंद्र यादव उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता राजकमल प्रकाशन संस्करण 2017 पृ.102

17 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.87

18 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.89

19 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.89

20 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.91

21 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.93

22 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.93

23 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.102

24 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.103

25 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.103

26 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.103

27 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.103

28 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.105

29 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.106

30 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.108

31 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.113

32 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.149

33 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.149

34 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.67

35 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ।89

36 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.91

37 कमलेश्वर समग्र उपन्यास प्रकाशन राजपाल एण्ड संज संस्करण 2020 पृष्ठ 91

38 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.91

39 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.93

40 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.94

41 कमलेश्वर समग्र उपन्यास राजपाल एण्ड संज प्रकाशन संस्करण 2020 पृ.98

42 सं.प्रदीप मांडव&अजय बिसारिया विरासत के अलंबरदार कमलेश्वर लवली बुक्स प्रकाशन संस्करण 2012 पृ.21